Answers to RSPL/1 (DS2)

खंड–क

1. (क) भारतीय समाज में नारी को दुर्गा, लक्ष्मी, माता, देवी जैसे गौरवपूर्ण शब्दों से सम्मानित एवं संबोधित किया गया है।

(ख) भारतीय समाज में लड़कियों को दहेज की कुप्रथा के कारण कुंठित होकर जीना पड़ता है क्योंकि इस जानलेवा कुप्रथा के कारण औरत का, उसके (त्याग, समर्पण, विश्वास आदि) गुणों का सही मूल्यांकन ही नहीं हो पाता है।

(ग) समाचार पत्रों में दहेज के लेन-देन से होने वाली घटिया हरकतों, बहू के जिंदा जलाए जाने की, दहेज की माँग के कारण लड़की के फाँसी लगाने की खबरें छापी जाती हैं।

(घ) भारत की सभी बुरी कलंकित सामाजिक समस्याओं की शाखाएँ दहेज रूपी तने से ही विकसित हुई हैं। दहेज रूपी तने से बाल-विवाह, अनमेल विवाह, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, आत्महत्या जैसी विकराल समस्याएँ जन्म लेती हैं।

(ङ) समाज में दहेज लेने और देने वालों को प्रतिष्ठा का पात्र समझा जाता है, जबकि दहेज का लेन-देन न करने वाले को हीन, दरिद्र आदि संबोधनों से संबोधित किया जाता है।

(च) इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है–'दहेज एक अभिशाप'।

खंड–ख

2. स्वतंत्र शब्द को जब वाक्य में प्रयुक्त किया जाता है तो वह शब्द लिंग वचन, कारक आदि के नियमों में बँध जाता है और 'पद' कहलाता है।

3. (क) परिश्रमी छात्र उत्तीर्ण हो गए। (सरल वाक्य)

(ख) जैसे ही समारोह आरंभ हुआ, बच्चों ने गणपति वंदना की। (मिश्र वाक्य)

(ग) मैं घर पहुँचा और बारिश तेज़ हो गई। (संयुक्त वाक्य)

4. (क) देहरूपी लता – देहलता (कर्मधारय समास)

आनंद में मग्न – आनंदमग्न (तत्पुरुष समास)

(ख) अष्टभुजा – आठ हैं भुजाएँ जिसकी ऐसी दुर्गा (बहुव्रीहि समास)

रातोंरात – रात ही रात में (अव्ययीभाव समास)

5. (क) यहाँ गन्ने का ताजा रस मिलता है।

(ख) शुद्ध भाषा लिखने का अभ्यास करो।

(ग) दूध में क्या पड़ गया है?

(घ) वे लोग वहाँ बैठे हैं।

6. (क) घड़ों पानी पड़ना–बहुत लज्जित होना।

बसंती जब अपने ही घर में चोरी करते हुए पकड़ी गई तो उस पर **घड़ों पानी पड़ गया।**

(ख) छाती पर पत्थर रखना–चुप रहकर कष्ट सहना।

राजेश ने जब अलग रहने का निर्णय कर लिया तो उसके वृद्ध माता-पिता ने **छाती पर पत्थर रख लिया।**

(ग) ख़्याली पुलाव पकाना–सिर्फ़ सोचते रहना।

शेख चिल्ली कोई काम धंधा नहीं करता था, वह सिर्फ़ लेटे-लेटे **ख़्याली पुलाव पकाता रहता था।**

(घ) आड़े हाथों लेना–सख़्ती से पेश आना।

पवन के परीक्षा में फेल होने पर उसके पिता ने उसे **आड़े हाथों लिया।**

खंड–ग

7. (क) पुलिस कमिश्नर के नोटिस में कानून की धाराओं का उल्लेख करते हुए स्पष्ट निर्देश दिया गया था कि यदि कोई सभा में भाग लेगा तो वह दोषी माना जाएगा। दूसरी ओर कौंसिल की तरफ से नोटिस निकाला गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण को वहाँ उपस्थित होना होगा। इस प्रकार पुलिस कमिश्नर और कौंसिल दोनों के नोटिस में ज़मीन आसमान का अंतर था।

(ख) समुद्र के गुस्से की वजह यह थी कि बड़े-बड़े बिल्डर, पिछले कई सालों से समुद्र के किनारे की ज़मीन हथियाने के लिए समंदर को पीछे धकेल रहे थे। बेचारा समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था। पहले तो उसने अपनी टाँगें समेटीं, फिर सिमटकर उकड़ूँ होकर बैठ गया, फिर खड़ा हो गया और खड़े रहने की जगह भी कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिया। इस तरह समंदर ने अपना गुस्सा निकाला।

(ग) सआदत अली अवध के नवाब आसिफ़ुद्दौला का भाई था। वह अंग्रेज़ों का दोस्त तथा ऐशोआराम पसंद व्यक्ति था। वह स्वयं भी ऐश करना चाहता था तथा उसने अंग्रेज़ों को भी मनमानी करने की छूट दे रखी थी। उसके तख्त पर बैठने से अवध पर कंपनी की पकड़ मज़बूत हो गई थी।

(घ) यह सत्य है कि जीवन में आदर्शवादिता का ही अधिक महत्व है परंतु कोरे आदर्श शुद्ध सोने जैसे होते हैं, जिसमें न चमक होती है न मजबूती। अगर व्यावहारिकता रूपी ताँबे को आदर्श रूपी सोने के साथ मिला दिया जाए, तो व्यावहारिकता की सार्थकता है क्योंकि इससे उसकी चमक और आकर्षण में वृद्धि होती है। इस प्रकार, जीवन में आदर्श के साथ व्यावहारिकता भी आवश्यक है क्योंकि व्यावहारिकता के समावेश से ही आदर्श सुंदर और मज़बूत हो जाते हैं। यही कारण है कि शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से की गई है।

8. तताँरा न केवल शारीरिक दृष्टि से शक्तिशाली एवं सुंदर व्यक्तित्व का मालिक था, अपितु चारित्रिक दृष्टि से भी वह नेक, परोपकारी, निस्वार्थ सेवाभावी, संवेदनशील और कोमल हृदय का युवक था। आकर्षक व्यक्तित्व के साथ-साथ उसके आत्मीय-स्वभाव एवं सेवाभाव ने उसे सबका प्यारा बना दिया था। उसके साहसिक कारनामों की चर्चा दूर-दूर तक होती थी। वामीरो के प्रति जगी प्रेम भावना का बलिदान कर उसने गाँववालों की संकीर्ण मनोवृत्ति और रूढ़िवादिता को समाप्त कर दिया। अपनी लकड़ी की तलवार से द्वीप के दो टुकड़े करते हुए उसने अपने शौर्य और प्रताप के साथ प्रेम की पवित्रता और सच्चाई को भी प्रकट किया। यही बातें उसके चरित्र को महान एवं लोकप्रिय बनाती हैं।

अथवा

"डायरी का एक पन्ना" आम भारतीय नागरिक को यही संदेश देता है कि स्वतंत्रता का सुख हमें आसानी से नहीं मिला है। लाखों लोगों ने लाठियाँ खाईं, जेलों की यंत्रणाएँ सहीं, सुख-सुविधाओं का त्याग किया तब जाकर हम विदेशी राजसत्ता से स्वयं को आज़ाद कर पाए। यह पाठ हमें यही प्रेरणा देता है कि देश के लिए बड़े से बड़ा त्याग और कष्ट सहने के लिए हमें तत्पर रहना चाहिए। यह पाठ हमें क्रांतिकारियों की कुर्बानियों की याद दिलाने के साथ-साथ "संगठन और एकता में शक्ति होती है," का संदेश देता है।

9. (क) यह गीत हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों पर लड़ रहे सैनिकों की मनःस्थिति का वर्णन करता है, जहाँ का तापमान शून्य से भी कम था। वहाँ सैनिकों का खून जमने लगता था, साँस उखड़ने लगती थी। एक तरफ आग उगलती बंदूकें तो दूसरी ओर जिस्म को जमा देने वाली ठंड कहर ढा रही थी। ऐसी विषम परिस्थितियों का सैनिकों ने बड़े साहस के साथ सामना किया, अपने बढ़ते कदमों को अपने आत्मबल से रुकने न दिया। वे आखिरी साँस तक जूझते रहे।

(ख) 'तोप' कविता अंग्रेज़ी शासन के अन्याय एवं अत्याचार की प्रतीक है। अंग्रेज़ों ने अपने विरोध में उठी हर आवाज़ को दबा दिया। अंग्रेज़ी शासन का विरोध करने वाले भारतीय राजाओं से युद्ध करते हुए ये तोपें आग, बारूद के गोले उगलती थीं। लाखों देशभक्त सूरमाओं को इन तोपों ने मौत के घाट उतार दिया था।

(ग) कबीर दास जी ने निंदा करने वाले व्यक्ति को अपने आँगन में कुटी बनाकर, अपने समीप रखने की सलाह दी है। उसकी निंदा सुनकर हम स्वयं में वांछित परिवर्तन कर सकते हैं। इस प्रकार, हम बिना साबुन और पानी के अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

(घ) 'मनुष्यता' नामक कविता में कवि ने कहा है कि प्रत्येक मनुष्य आपस में एक-दूसरे के बंधु हैं। इस बात को स्वीकार करना ही सबसे बड़ा ज्ञान है। वस्तुतः हम सभी उस परम पिता परमेश्वर की संतान हैं, जो सबके लिए एक है। हम भले ही अलग-अलग दिखाई देते हैं परंतु हम सब उसी ईश्वर के अंश हैं।

10. कबीर दास के अनुसार 'सोना' अज्ञान और 'जागना' ज्ञान का प्रतीक है। कबीर दास के अनुसार जब तक प्राणी क्षणभंगुर सांसारिक सुखों के पीछे भागता रहता है तब तक वह घोर अज्ञान से मुक्त नहीं होता है। सांसारिक सुखभोग की चाह दुखदायी सिद्ध होती है और व्यक्ति जन्म-मृत्यु के चक्र में उलझा रहता है। ऐसी स्थिति में ज्ञान के लिए जागृति न होना ही 'सोना', सोए रहना कहलाता है, परन्तु इसके विपरीत जब व्यक्ति अपने आत्मतत्व को जानकर, प्रभु के शाश्वत आनंदमय स्वरूप को जान लेता है तो सांसारिक भोग-लिप्सा की भावना से मुक्त होकर जागृत हो जाता है। यही जागना ज्ञान का प्रतीक है।

अथवा

अपने आराध्य श्रीकृष्ण का दर्शन प्राप्त करने के लिए साधिका मीराबाई अपना सर्वस्व समर्पित करने को तैयार हैं–

- वे कृष्ण की दासी बनकर उनके लिए सुंदर बाग बगीचे लगाना चाहती हैं, जहाँ विहार करते हुए कृष्ण को देखकर वह तृप्त हो जाना चाहती हैं।
- वे वृंदावन की कुंज गलियों में श्रीकृष्ण की लीला के गीत गाना चाहती हैं।
- वे श्रीकृष्ण के लिए बीच-बीच में खिड़कियों वाले ऊँचे-ऊँचे भवन बनाना चाहती हैं, वे उन झरोखों से अपने आराध्य का दर्शन कर सकें।
- वे केसरिया साड़ी पहन कर यमुना के तट पर आधी रात को अपने आराध्य के दर्शन हेतु प्रतीक्षा करना चाहती हैं। इस प्रकार साधिका मीरा श्रीकृष्ण के दर्शन कर अपने हृदय की अधीरता को मिटाना चाहती हैं।

11. (क) ब्राह्मण परिवार का बेटा 'टोपी शुक्ला' अपने घर के अन्य सभी सदस्यों से सर्वथा भिन्न था। वे सभी छुआछूत, जात-पाँत में विश्वास करने वाले कट्टरपंथी थे। टोपी के लिए मित्रता और स्नेह का ही महत्व था, जाति-धर्म का बिलकुल भी महत्व नहीं था। इसलिए वह अपनी माँ व दादी से पिटता रहा, लेकिन इफ़्फ़न से नाता तोड़ने की बात मुँह से न निकाली। टोपी के पिता और दादी लखनऊ की शहरी भाषा बोलते थे, लेकिन उसे माँ की देहाती और अवधी भाषा से प्यार था इसलिए देहाती बोलने वाली इफ़्फ़न की दादी से उसने पोते का रिश्ता जोड़ लिया था। पूरे घर में उसके दुख-दर्द को समझने वाला कोई नहीं था। दो बार फेल हो जाने पर उससे सहानुभूति तो दूर, उसकी दादी ने भी उसे अपमानित किया। ऐसे वातावरण में टोपी को अकेलेपन का अहसास होना स्वाभाविक ही था।

(ख) हरिहर काका के मामले में गाँव वाले दो गुटों में बँट गए थे। एक दल की राय थी कि काका को अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम लिख देनी चाहिए इससे उनकी कीर्ति बनी रहेगी और परलोक भी सुधर जाएगा। इस दल के लोग ठाकुरबारी से मिलने वाले खीर-मालपुओं का प्रसाद जी भरकर खाते थे, वहाँ से मिलने वाली सुख सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाते थे।

दूसरे वर्ग में गाँव के प्रगतिशील विचारों वाले वे लोग थे जो यह राय देते थे कि हरिहर काका को अपनी ज़मीन अपने भाईयों के नाम कर देनी चाहिए। उनकी देखभाल करने का दायित्व भी उनके भाईयों का ही था। यद्यपि सच्चाई यह थी कि उनके भाई भी उनकी देखभाल तो नहीं करते थे परंतु उनकी ज़मीन हड़पना चाहते थे। इस प्रकार दोनों ही पक्ष कोई न्यायपूर्ण निर्णय न कर सके और व्यक्तिगत स्वार्थों को ही अहमियत देते रहे।

खंड–घ

12. (क) **अनेकता में एकता : भारत की विशेषता**

उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक, पूर्व में गारो-खासी, जयंतिया की पहाड़ियों से लेकर पश्चिम में थार के रेगिस्तान तक विस्तृत भारतीय भू-भाग में जहाँ एक और प्रकृति के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं, वहीं दूसरी ओर भाषा, धर्म, पहनावे और खान-पान आदि की अनगिनत भिन्नताएँ भी दिखाई देती हैं जो आपस में एक-दूसरे से मिलकर एक भव्य भारत की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। एक ओर अनेकानेक धाराओं को समेटती गंगा की पावन धारा है तो दूसरी ओर दक्षिण की अनगिनत जलधाराओं से गोदावरी भी पोषित होती है। खान-पान, रहन-सहन वेशभूषा, गीत-संगीत, रीति-रिवाज़, आचार-विचार, भाषा-बोलियों, संस्कृति-परंपराओं का जितना वैविध्य भारत में दिखाई देता है, उतना विश्व के किसी अन्य देश में नहीं। इन सभी भिन्नताओं को एक सूत्र में बाधा है भारत की विलक्षण भावात्मक एकता; भारतीयता की भावना ने। 'वसुधैव-कुटुंबकम्' और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की लोक-मंगल की भावना तथा समग्र विश्व को एकता के सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास भी भारतीय मनीषियों के द्वारा किया गया है। भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे फूलों से सजे उपवन के समान अनेकता में एकता को समेटे भारतभूमि अनंत काल से अपनी संपन्नता और विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है।

(ख) **परिश्रम ही सफलता की कुंजी है**

मानव जीवन में कर्म का विशेष महत्त्व है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्पष्ट कहा है–

"सकल पदारथ हैं जग माहीं।
कर्महीन जन पावत नाहीं॥"

सांसारिक सुख-वैभव की प्राप्ति कठोर परिश्रम से ही होती है। रॉबर्ट कोलिया र ने कहा था–मनुष्य की सर्वोत्तम मित्र हैं, उसकी दस उँगलियाँ। मनुष्य ने पाषाण युग से लेकर आज के अंतरिक्ष-युग तक सभ्यता-संस्कृति ज्ञान और विविध आविष्कारों की कहानी अपने हाथों से लिखी है। उसने अन्न उत्पन्न किया, वस्त्र बनाए, भवन, पुल, सड़कें और बाँध बनाए, मशीनों का आविष्कार किया, रॉकेट और मिसाइल बनाए। यह सब उसके अथक परिश्रम का ही परिणाम है। लाखों-करोड़ों देशभक्तों ने यदि अपना स्वेद और रक्त न बहाया होता, केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहते तो क्या कभी स्वतंत्रता का सुख हम लोग भोग पाते? उद्यमी पुरुष अपने श्रम से निरंतर सफलता के नए-नए शिखरों को चूमता हुआ प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ता है। वह कठोर परिश्रम करते हुए अपने साथ दूसरों को भी आगे बढ़ने का सुअवसर प्रदान करता है। "दैव-दैव" की पुकार तो आलसी ही लगाते हैं। कहा जाता है कि "सोते हुए सिंह के मुँह में हिरन स्वयं प्रवेश नहीं करता है।" अर्थात सिंह जैसे शक्तिशाली पशु को भी अपना पेट भरने के लिए शिकार करना पड़ता है। वस्तुतः इस संसार में स्वर्ग के सामान सारे सुख विद्यमान हैं, लेकिन वे केवल उन्हें ही प्राप्त होते हैं, जो परिश्रमी होते हैं। दिन रात सर्दी, गर्मी, बरसात सहकर, परिश्रमी मज़दूर महल जैसे आलीशान घर बनाते हैं, अध्यापक परिश्रमपूर्वक छात्रों को पढ़ाते हैं, किसान कठोर परिश्रम करके अन्न उत्पन्न करता है, ये सभी और अन्य परिश्रमी व्यक्ति आदर और अनुकरण के पात्र हैं।

(ग) **बाल-मज़दूरी : सामाजिक कलंक**

बाल-मज़दूरी का अर्थ है–छोटे-छोटे बच्चों से पढ़ने-लिखने और खेलने की उम्र में पैसा कमाने एवं रोज़गार करने के लिए काम करवाना। माचिस बनाने जैसे खतरनाक काम हों या कालीन बुनना, गाड़ी साफ़ करना, ढाबों और घरों में बरतन माँजने जैसे कठोर काम हों, इन मासूम बच्चों को अपने पेट की आग बुझाने के लिए, अपने परिवार व छोटे भाई-बहनों को खाना खिलाने के लिए करने पड़ते हैं। बूट पालिश करते हुए बच्चों की झुकी हुई गर्दनें और नीची आँखों में अधूरे सुनहले सपने सारी कहानी कह देते हैं। बेबसी और मज़बूरी का जीवन जीते हुए ये बाल मज़दूर, सभ्य और प्रगतिशील समाज के माथे पर कलंक हैं। यद्यपि सरकार ने बाल मज़दूरी को रोकने के लिए कई कानून बनाए हैं, परंतु जब तक बाल मज़दूरी को बढ़ावा देने वाले कारणों की रोकथाम नहीं की जाएगी, इस कलंक को मिटाया नहीं जा सकता है। गरीबी, अशिक्षा, अशिक्षित परिवारों में बच्चों की संख्या का अधिक होना, आमदनी में कमी, लोगों की कम पैसों में काम करवाने की प्रवृत्ति आदि कुछ ऐसे कारण हैं जिन्हें सामाजिक सद्भाव और मानवीय संवेदना के बल पर दूर किया जाना चाहिए। समाज के प्रत्येक नागरिक को समझना होगा कि एक बच्चे की उपेक्षा करना प्रकृति की एक संभावना की उपेक्षा करना है। जागरूक नागरिक ही सक्रिय होकर समाज के इस कलंक को मिटा सकते हैं।

13. परीक्षा भवन

नई दिल्ली - 05

दिनांक–xx - xx - xxxx

सेवा में

संपादक

दैनिक जागरण

बहादुरशाह ज़फर मार्ग

नई दिल्ली

विषय : पेयजल की आपूर्ति में कमी की समस्या के संदर्भ में।

महोदय,

मैं दिल्ली का जागरूक नागरिक होने के नाते दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों और जनता का ध्यान पेयजल के गहराते संकट की ओर आकृष्ट करना चाहती हूँ। मेरे इन विचारों को अपने समाचार-पत्र में छपवाकर जनता तक पहुँचाने में आपके सहयोग की प्रार्थना कर रही हूँ।

पिछले वर्ष भी दिल्लीवासियों को पेयजल की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ा था। इस बार भी जुलाई का महीना बीत गया है पर आसमान में बादल नहीं दिखाई दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में बूँद-बूँद जल भी जीवन के लिए अमृत तुल्य है। पड़ोसी राज्य से अनुबंध करके नदियों के जल का भरपूर उपयोग करके, कई छोटे-छोटे बाँध बनाकर अनियंत्रित रूप से बहते हुए जल का सदुपयोग किया जा सकता है। दिल्ली की बढ़ती हुई आबादी के लिए पेयजल की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

आशा है समाज के जागरूक लोग इस समस्या पर अवश्य ध्यान देंगे।

धन्यवाद

भवदीया

क०ख०ग०

अथवा

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक–xx - xx - xxxx

सेवा में

माननीय गृह-मंत्री

भारत सरकार

नई दिल्ली - 01

विषय : दिल्ली में बढ़ते अपराधों की रोकथाम के संबंध में।

महोदय,

सेवा में विनम्र निवेदन यह है कि मैं दिल्ली प्रदेश का एक जागरूक नागरिक हूँ तथा आपका ध्यान दिल्ली में बढ़ते अपराधों की ओर दिलाना चाहता हूँ। चोरी-डकैती के साथ अपहरण और जबरन वसूली की घटनाएँ भी दिन पर दिन बढ़ती जा रही हैं। पुलिस अधिकारी भी चुप्पी साधे बैठे हैं। पुलिस विभाग भी आपके अधीन है। विवश होकर आपको पत्र लिखना पड़ा। इस संबंध में शीघ्र ही कोई कार्यवाही करें। आम जनता लूट-पाट और जेबकतरों से बहुत परेशान है। स्वस्थ, सुखी, समृद्ध जीवन का विश्वास दिलाने वाली आपकी सरकार से सहयोग की अपेक्षा है।

सधन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०

14.

आनंद पब्लिक स्कूल,
आनंद निकेतन, दिल्ली

दिनांक : 25-04-20xx

सूचना

सभी छात्र/छात्राओं को सूचित किया जाता है कि ग्रीष्मावकाश में दिनांक 25-5-20xx से 25-6-20xx तक, विद्यालय के प्रांगण में योगाभ्यास की कक्षाएँ प्रातः 7.00 से 8-30 बजे तक चलेंगी। इच्छुक विद्यार्थी कक्षा अध्यापिका को अपना नाम लिखवा दें।

प्रधानाचार्य

अथवा

सरस्वती विद्या मंदिर, भोपाल

दिनांक : 02-07-20xx

सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 02 जुलाई से 9 जुलाई तक विद्यालय-वाटिका परिसर में 'वन महोत्सव' मनाया जाएगा। बारहवीं कक्षा के छात्र बीस यूकेलिप्टस के पेड़ लगाएँगे। सभी विद्यार्थी प्रातः 8.00 बजे वाटिका परिसर में एकत्रित हों।

प्रधानाचार्य

15. **रवि** – नमस्ते रघु! आज मौसम बड़ा सुहावना है।

रघु – चलो बांद्रा में समुद्र के किनारे घूम आते हैं।

रवि – उतनी दूर क्यों, यहीं पास में छोटा-सा समुद्र तट है वहीं घूम लेते हैं।

रघु – चलो, वहीं चलते हैं।

रवि – अरे! यहाँ तो समुद्र का किनारा कितना साफ़ सुथरा है।

रघु – हाँ! जब से प्रधानमंत्री ने स्वच्छता को एक अभियान बना दिया है, तब से लोग सफ़ाई के संबंध में काफ़ी जागरूक हो गए हैं।

रवि – मित्र! स्वच्छता तो हमारी दिनचर्या का एक अंग है, लोगों को स्वच्छता के विषय में बताने की क्या आवश्यकता है।

रघु – मित्र! कभी-कभी छोटी-छोटी बातें भी बहुत असर डालती हैं।

रवि – क्या तुम्हें पता है कि शाम के समय इस इलाके के सभी वरिष्ठ नागरिक यहाँ सैर करने आते हैं। यदि कहीं कोई कूड़ा दिखाई देता है तो उसे थैली में भरकर उस बड़े कूड़ेदान में डाल देते हैं।

रघु – तभी तो! सुबह-सुबह यहाँ इतनी सफ़ाई नज़र आ रही है।

रवि – हाँ! आजकल बच्चे भी कूड़ा नहीं फेंकते हैं। यहाँ समुद्र की सुखद हवा में घूमना, व्यायाम करना बहुत अच्छा लगता है।

रघु – हम प्रत्येक रविवार सुबह यहाँ सैर करने आएँगे।

अथवा

बैंक अधिकारी – आओ किसान भाई! यहाँ बैठो।

रमिया – बाबू जी, मेरा नाम रमिया है।

बैंक अधिकारी – आओ रमिया, तुम मुझे अपनी समस्या बताओ।

रमिया – बाबू जी, मैं बैंक में खाता खोलना चाहता हूँ।

बैंक अधिकारी – यह तो बड़ी अच्छी बात है। मुझे अपना आधार-कार्ड दिखाओ।

रमिया – आधार-कार्ड?

बैंक अधिकारी – खाता खोलने के लिए आधार-कार्ड ज़रूरी है।

रमिया – मैंने तो नहीं बनवाया है।

बैंक अधिकारी – तो अब बनवा लो। चलो मैं तुम्हारा आधार-कार्ड बनवा देता हूँ।

रमिया – इससे क्या फ़ायदा होगा?

बैंक अधिकारी – इससे तुम्हारा पैसा पूरी तरह से सुरक्षित रहेगा। 'किसान-कार्ड' से खेती के लिए बीज और खाद आदि की सुविधाएँ भी मिल जाएँगी।

रमिया – अच्छा!

बैंक अधिकारी – सरकारी सहयोग और सुविधा पाने के लिए आधार-कार्ड ज़रूरी है।

रमिया – चलिए बाबूजी! मेरा भी आधार-कार्ड बनवा दीजिए।

16.

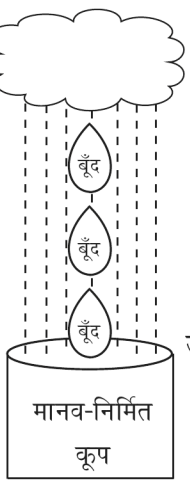

जल है तो कल है

जल की एक-एक बूँद बचाएँ।
जल को व्यर्थ कभी न बहाएँ।

जल की एक बूँद न गँवाएँ,
धरती को स्वर्ग और कल को सुखद बनाएँ॥

यदि पानी न हो तो जीवन ही समाप्त हो जाएगा।
जीव जंतु, पेड़-पौधे मानव सभी का जीवन जल पर निर्भर है।

जल ही धन है, जल ही जीवन-प्राण है!

अथवा

"ज्ञान बाँटने से बढ़ता है"

दीप से दीप जलता है, ज्ञान का उजाला फैलता है

विद्या-भवन, घंटाघर चौक, पुस्तक की
दुकान से कक्षा 8वीं और कक्षा 10वीं की
पुरानी पाठ्य पुस्तकें निःशुल्क प्राप्त करें।

परोपकारी विद्यार्थियों का सहयोग सर्वथा प्रशंसनीय है।